ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

श्रीमती संगीता शर्मा (2026). ***छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की धार्मिक पृष्ठभूमि : राम के विशेष सन्दर्भ में.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 52-62.

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & REVIEWS

journal homepage: www.ijmrr.online/index.php/home

छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की धार्मिक पृष्ठभूमि : राम के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. श्रीमती संगीता शर्मा

जिला:बिलासपुर, राज्य: छत्तीसगढ़, भारत

ईमेल: ssharmaranu79@gmail.com

How to Cite the Article: श्रीमती संगीता शर्मा (2026). ***छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की धार्मिक पृष्ठभूमि : राम के विशेष सन्दर्भ में.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 52-62.

https://doi.org/10.56815/ijmrr.v5i4.2026.52-62

Keywords (बीज शब्द)	*Abstract* (सारांश)
छत्तीसगढ़, *लोकगीत,* *चित्रोत्पला,* *अरण्य,* *राम,* *कौशल्या,* *रमकेलिया,* *छिताफल*	मानव जीवन सुख दुःख की गाथा से जुडा हुआ है । जब कोई हर्ष या विषाद की घटना अप्रत्याशित रूप से घटित होती है, तब मन में वीणा के तार झंकृत हो उठते हैं । मानव मन से उसकी रसात्मक अनुभूति अनायास ही फूट निकलने को व्यग्र हो उठती है । छत्तीसगढ़ में लोक गीतों का विपुल भंडार है । छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में सरलता के साथ-साथ भावनाओं की प्रबलता, सरसता तथा रागात्मकता के दर्शन होते हैं जो परम्परा विश्वास और धारणाओं से समृद्ध है । छत्तीसगढ़ धार्मिक भावना से ओतप्रोत है यहाँ का जनमानस ईश्वर के अस्तित्व को किसी न किसी रूप में स्वीकार करता है । यहाँ की लोक संस्कृति में धर्म का विशेष स्थान है । भारतीय वांग्मय के आदि स्रोत के रूप में राम कथा विख्यात है । अपने उद्गम से अनेक रूपों में परिवर्तित होती हुई सूक्ष्म से विराट रूप धारण करती हुई

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

श्रीमती संगीता शर्मा (2026). ***छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की धार्मिक पृष्ठभूमि : राम के विशेष सन्दर्भ में.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 52-62.

	मानव जीवन को मानवता के महत्तर आदर्शों एवं असाधारण मानव मूल्यों के प्रति आकर्षित करने वाली राम कथा जन जन के मानस में समाहित है । छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में श्री राम आत्मा की तरह अवस्थित हैं । लोक जीवन में राम रमे हुए हैं । लोक का सम्पूर्ण जीवन ही राममय है । जीवन के हर सुख और दुःख में वह राम का ही स्मरण करता है । छत्तीसगढ़ी लोकगीतों मेंजहाँ श्री राम का व्यक्तित्व पुराणसम्मत तथा वाल्मीकि और तुलसी से विशेष रूप से प्रभावित है वही जनमानस की कल्पनाशीलता ने उसे नवीन रूपों में प्रतिस्थापित किया है ।

प्रस्तावना :

भारत के हृदयस्थल मध्यप्रदेश के दक्षिण पूर्वी भाग में छत्तीसगढ़ स्थित है ।[1] छत्तीसगढ़ अंचल की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर की अपनी विशिष्ट गरिमा है । अरण्य की गोद में इठलाती हुई चित्रोत्पला, महानदी-शिवनाथ, घाटी में प्रसन्नचित्त होकर क्रीडा करते हुए धान के कटोरे को सदैव परिपूर्ण रखने वाला यह छत्तीसगढ़ देश की खुशहाली का प्रतीक है । यहाँ की भूमि यदि एक ओर महानदी, शिवनाथ, इन्द्रावती, हसदेव और मनियारी जैसी पुण्यसलिला की कलकल से ध्वनित होती है, तो दूसरी ओर अमरकंटक, मैकल, रामगिरी जैसी गिरी श्रृंखलाओं से सुसज्जित है । यहाँ के खंडहर बीते वैभव की कहानी कहते हैं । वैभव, सम्पन्नता, सुख-शांति एवं सांस्कृतिक समन्वय यहाँ के प्राचीन सुप्रशासन के द्योतक रहे।[2] यहाँ की लोक संस्कृति में धर्म का विशेष स्थान है । यहाँ के अंचल में सभी गाँवों में लोककला मण्डली होती है जो गीत संगीत के माध्यम से जनजागृति का संदेश देती है ।

मानव जीवन सुख दुःख की गाथा से जुडा हुआ है । जब कोई हर्ष या विषाद की घटना अप्रत्याशित रूप से घटित होती है, तब मन में वीणा के तार झंकृत हो उठते हैं । मानव मन से उसकी रसात्मक अनुभूति अनायास ही फूट निकलने को व्यग्र हो उठती है । पं. रामनरेश त्रिपाठी के अनुसार – "जिस प्रकार कोई नदी घोर अन्धकार में गुफा से बहकर आती हो, उसके उद्गम का पता न हो, ठीक यही दशा लोक गीतों की है।"[3]

लोक गीत सम्भवतः उतने ही प्राचीन हैं जितना की आदिमानव । मनुष्य को सामाजिक प्राणी माना गया है, वह एकाकी रहना पसंद नहीं करता इसलिए जब उसमें सर्व प्रथम भावना के अंकुर फूटे तो इन भावनाओं को व्यक्त करने के लिए जिस लयात्मक अभिव्यक्ति का आश्रय लिया होगा उसे कालांतर में लोगो ने गा-गाकर लोकगीत का रूप दिया अथवा उसमें भावों की अभिव्यक्ति आलाप के रूप में प्रारम्भ हुई

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

श्रीमती संगीता शर्मा (2026). ***छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की धार्मिक पृष्ठभूमि : राम के विशेष सन्दर्भ में.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 52-62.

और इसी आदि संगीत ने लोकगीत का रूप धारण किया । लोकगीत देश की प्राचीन संस्कृति का पुनर्जागरण करते हैं इसमें आध्यात्मिक मूल्यों का वर्तमान युग की वैज्ञानिक उपलब्धियों के साथ तादात्म्य स्थापित किया जाता है ।[4] छत्तीसगढ़ में लोक गीतों का विपुल भंडार है । छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में सरलता के साथ साथ भावनाओं की प्रबलता, सरसता तथा रागात्मकता के दर्शन होते हैं जो परम्परा विश्वास और धारणाओं से समृद्ध है ।

जब मानव ने सर्वप्रथम आँखे खोली तब प्रकृति के इन्द्रधनुषी रंगो, सरिताओं का कल- कल निनाद, झरनों की सुमधुर ध्वनी, पक्षियों का कलरव, चारो ओर विकीर्ण हरीतिमा, रंग बिरंगे पुष्पों का सौंदर्य देखकर प्रकृति में अवस्थित चेतन शक्ति की जिजीविषा जागृत हुई । मानव ने पूरी सृष्टि को ईश्वर का प्रतिरूप माना । उसने अपने ज्ञान अनुभव द्वारा प्रकृति की अलौकिकता से अभिभूत होकर उसकी पूजा अर्चना प्रारम्भ की , सम्भवतः यही धर्म का आदि रूप था । छत्तीसगढ़ धार्मिक भावना से ओतप्रोत है यहाँ का जनमानस ईश्वर के अस्तित्व को किसी न किसी रूप में स्वीकार करता है ।

भारतीय वांग्मय के आदि स्रोत के रूप में राम कथा विख्यात है । अपने उद्गम से अनेक रूपों में परिवर्तित होती हुई सूक्ष्म से विराट रूप धारण करती हुई मानव जीवन को मानवता के महत्तर आदर्शों एवं असाधारण मानव मूल्यों के प्रति आकर्षित करने वाली राम कथा जन जन के मानस में समाहित है । रामचरित से विकसित मूल्य शाश्वत हैं, प्रत्येक देशकाल के लिए उपयोगी हैं ,वे मानसोल्लास के साथ सामाजिक चित्त के निर्माण में पूर्ण समर्थ हैं । श्री राम का व्यक्तित्व भारतीय लोक चेतना में हृदय की धडकनों में अजर अमर तथा अमिट है । छत्तीसगढ़ को भगवान श्री राम का ननिहाल माना जाता है । माता कौशल्या का यह मायका है । श्री राम को छत्तीसगढ़ में भांजा माना जाता है इसलिए छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में श्री राम आत्मा की तरह अवस्थित हैं । लोक जीवन में राम रमे हुए हैं । लोक का सम्पूर्ण जीवन ही राममय है । जीवन के हर सुख और दुःख में वह राम का ही स्मरण करता है । जन्म से लेकर विवाह तक के लोक गीतों में राम का मनोहारी रूप ही अंकित है । एक ओर जहाँ हर शिशु के जन्म पर सोहर गाकर नवजात शिशु के रूप में श्री राम के सुभागमन के संकेत दिए जाते हैं –

आनन्द दशरथ कौशल्या के रे,

जे दिन राम अवतरे,

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

श्रीमती संगीता शर्मा (2026). ***छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की धार्मिक पृष्ठभूमि : राम के विशेष सन्दर्भ में.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 52-62.

बढई के कहियो जी बढई तो हमारे,

एक पलंग गढ़ी देयो हीरा के खूंटे ।

वही विवाह के अवसर पर हर वर में राम और हर वधू में सीता की ही कल्पना की जाती है –

काकर बर सीताराम, काकर बर भेजों सलाम ।

जीवन के हर दुःख में राम लोक जीवन के साथ हैं चाहे वह प्रियतम से बिछुड़ने की कसक हो-

में तो का जानो राम, जियरा बियाकुल पिया बिना

निर्धनता की पीड़ा में भी राम ही हैं –

बादर मोर ओढना हे, धरती पिछोरी,

मछरी मोर चंडी, मछरी मोर सोना राम ।

अथवा मृत्यु का भीषण दुःख – **राम नाम सत्त है सत्त बोलो गत्त है ।**

हर अवसर पर लोक जीवन राम को भजता है – **भज रे ले अभिमान सिरी सीताराम ।**

हर दुःख के अवसर पर जब क्षण भी युग के समान लम्बे हो जाते है, बचाने वाले केवल राम होते हैं –

रतिहा के चंदा,, मझिनिहा के घाम ,

छिन छिन जग नह के बचईया सीताराम

देवता तक राम का ही नाम भजते हैं - **राम राम सब देव जपत हैं, दादुर बचन सुनाये ।**

पुराणों ने राम को जो चाहे रूप दिया हो लोक के राम उसके अपने हैं इसलिए राम एक सामान्य पुत्र की तरह कार्य करते हैं, वह आदिशक्ति माता का तालाब खुदवाते हैं-

राम कोडावय ताल सागरीया, लछमन बंधवाये पार,

बूढी माँ हां लखै अमरइया, लंगूरे भये रखवारे हो माय ।

देवकी को उनके सभी पुत्र राम की कृपा से प्राप्त होते हैं –

देवकी रानी गरभ में रहे , मन मन में गुण सोचये हो

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

श्रीमती संगीता शर्मा (2026). ***छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की धार्मिक पृष्ठभूमि : राम के विशेष सन्दर्भ में.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 52-62.

ललना कैइसे के राखँव, ये गरभ ला कंस तो फुस्लाहा हावे हो

साते पुत्र रामे हां दिस ,पाछु सकल कंस हर लिए हो

गंगा राम के ही चरणों से निकल कर बहती है-

नई पायेंव राम तोर चरण के गति ला,

तोरे चरण गंगा जल बहिगे, भागीरथी बिलमाये महराज ।

राम के प्रति अनुराग इस शैला गीत में दर्शित है –

अपन कोनो नही आये ओ ।

विगन राम रघुनन्दन,

अपन कोनो नही आये ओ ।

संसार की नश्वरता बताता यह गीत राम नाम की महिमा का गुणगान करता है –

तज ले रे सज अभिमान

सिरी सीता राम ला सुमिरन भजा

बोये सोना जामे नहीं

गये समे बहुरे नाही

खोजे मिले न उधार

छत्तीसगढ़ी लोक गीतों के अनुसार राम का जन्म पुत्र्येष्टी यज्ञ के कारण नहीं बल्कि माता कौशल्या के द्वारा भोजली माता की पूजा के फलस्वरूप हुआ है-

भोजली के रेंगना माँ नरबदा बोही जइहे

अंखारा मां आँचल चाउर गढला मां दूध

खड़े हे कौशल्या रानी मांगथे पूत

लक्षमण के त्याग को देखकर छत्तीसगढ़ के लोकगीतों में उन्हें सहोदर मानते हैं –

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

श्रीमती संगीता शर्मा (2026). ***छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की धार्मिक पृष्ठभूमि : राम के विशेष सन्दर्भ में.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 52-62.

गौरी के गणपति भये, अंजनी के हनुमान रे,

कालिका के भैरव भये, कौशिल्या के लक्षमण राम रे ।

वन्य पशु के धोखे में राजा दशरथ श्रवण कुमार को बाण मार देते है । पुत्र वियोग में उनके बूढ़े और अंधे पिता के द्वारा शाप दिया जाता है की उनके पुत्र को वनवास होगा और उनकी मृत्यु भी पुत्र वियोग के कारण होगी – **मोर पुत्र ला तै मारे तोर पुत्र ला होही वनवास**

राजा जनक अपनी पुत्री के विवाह के लिए नारियल अयोध्या के राजा के घर भेजते हैं –

राजा जनक के एकठन सीता, तेकर रंचे बिहाव हो,

काकर बर पठावे नरियर धोतिय, काकर लाल कुमार हो,

अयोध्या नगर नृप दशरथ हैं, तिनके चार कुमार हो ।

शिव का धनुष राम ने ही तोडा जो कि राम की महान शक्ति का परिचायक है –

चलो हो धनुष ला रख दो मानीक चौरा मां ,

टोरवैया राजा राम

धनुष ला रख दो मानीक चौरा मां ।

सीता का गौरी पूजन हेतु आगमन और राम गुरु की आज्ञा से फूल लेने आये है तो वाटिका में दोनों का प्रथम मिलन-

मैया तोरे दरस बरस माता आये, हे जनक दुलारी हो माये,

सात सखी सिय संग में लेके, गिरिजा पूजन जाए हो माय,

राम लखन गुरु आयसु पाय, फुलवा देखन जाए।

राम और सीता के वैवाहिक कार्यक्रम प्रारम्भ होते हैं –

राम लखन के मोर तेल चघात हवे ,बाजा के सुनव तुम तान ।

दशरथ अपने पुत्रों की बारात लेकर आते हैं – **रामचन्द्र के बिहाव होवत हे दशरथ ठासे बरात**

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

श्रीमती संगीता शर्मा (2026). ***छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की धार्मिक पृष्ठभूमि : राम के विशेष सन्दर्भ में.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 52-62.

बारात प्रस्थान में शील आचरण के धनी श्रीराम को घोड़े पर आसीन बताया गया है जबकि उग्र स्वभाव के लक्ष्मण जी को सिंह सवार बताया गया है –

"बड़े बड़े देवता रेंगत हैं बारात बरम्हा महेश,

लिली हंसा घोड़वा में राम जी चघे हैं,

लछमन चघे सिंह बाघ।"

लोक के राम भले राजा हो परन्तु वे जनता के राम है जो जनता के पास नहीं है उसे शासक को भी भोगने का अधिकार नहीं है इसलिए राम जनता की तरह होली खेलते हैं। वे मुकुट पहनकर नहीं बल्कि गाँव के एक सामान्य व्यक्ति की तरह पगड़ी पहन कर होली खेलने आते हैं । राम सीता की अयोध्या में यह पहली होली है जिसमे राम की पगड़ी और सीता की साडी भीगती है यहाँ मर्यादा का निर्वहन किया गया है –

अजोध्या मां राम खेले होरी, अजोध्या मां राम खेले होरी,

राम के भीजे अगड़ी पगड़ी सीता के भिजगे साड़ी।

राम के वनवास का जब भरत को जब सत्य ज्ञात होता है तब माता को फटकारते हुए स्वयं वन गमन को तैयार हो जाते हैं –

मैं न जियों बिन राम ओ माता ,मैं न जियों बिन राम

भल राम लखन सिय बन पथवाये, नाही किये भल काम

भल होत मोर हमहू बन जैहो ,अवध रहे कही काम

राम के बिना भरत को अयोध्या में अच्छा नहीं लगता -

निको न लागे रे अजोध्या, मां निको न लागे,

हां हां अजोध्या में घर नई हे लक्ष्मण राम ।

वर्षा के आगमन से भरत की चिंता बढ़ जाती है की राम किस हाल में होंगे –

रुमझुम रुमझुम मेघा बरसते पवन चले पुरवाई,

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

श्रीमती संगीता शर्मा (2026). ***छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की धार्मिक पृष्ठभूमि : राम के विशेष सन्दर्भ में.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 52-62.

कोन बिरिछ तर ठाढ़े होइहे राम लखन दुनो भाई।

भरत राम लक्षमण को वन में ढूंढते हैं –

कोन बन मां तेंदू कोन बन मां जाम

कोन बन मां मिले लछमन आउ राम

सीता को हरण से बचाने के जटायु आते है जिसे रावण अग्नि बाण मार कर पंख और चोंच जला देता है –

याहा रथ पर तिरिया रोये , शरण शरण गोहराई

उड़त आवे जाट जटायु निरखत आवे नीर

अगिन बाण मारे निशाचर ,चोंच पंख जार जाई

राम हनुमान को सीता की खोज के लिए भेजते हैं –

राम धरे बरछी लछमन धरे बाण ,सीतामाई ला खोजे बर गये हनुमान

हनुमान बाधाओं को पार कर सीता की खोज करते हैं –

बरसे ला पानी आये ला घटा, सीताजी के घर ला लगावत है पता

हनुमान सीता का पता लगाकर लौटते हैं –

कान्हा धरे बासुरी आउ राम धरे बान

सीतामाई के खभर ला ले जाते हनुमान

लंका में रावण सीता की अंगूठी दान में मांगता है यहाँ मर्यादा का पालन करते हुए सीधे विवाह प्रस्ताव न रख कर अप्रत्यक्ष रूप से –

नवा रे कैंची धराये ला सान सीतामाई के मुंदरी ला रावण मांगे दान

जब रावन सीता से विवाह संदेश रखता है तब सीता की पतिव्रता रूप दिखाई देता है –

धरी के मंदोदरी थारी माँ कलेवा चले सिया के पास

उठी उठी सिया भोजन कर ले करिहो लंका के राज

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

श्रीमती संगीता शर्मा (2026). ***छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की धार्मिक पृष्ठभूमि : राम के विशेष सन्दर्भ में.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 52-62.

नहीं धारों तोर थारी कलेवा , नहीं करों लंका के राज

बांस भीरा मां मरी हरी जैहों ,लगी जाहू राम के साथ

राम लंका पर आक्रमण करते है –

राम रचे मया लखन ठाकुर कहयेगा

राम सीता के कारण लंका में चढ़ी जाएगा

हनुमान अपनी गदा से रावण को मारते हैं यहाँ राम की महानता बताई गयी है की रावण जैसे बलशाली को उनका सेवक भी आसानी से मार देता है –

राम धरे बरछी लखन धरे बान

पापी रावण ला मारे गदा मां हनुमान

निम्नलिखित सुआ गीत में राम वनवास एवं सेतुबंध रामेश्वर की घटना का संकेत है –

कइसे के चिन्हों सिया जानकी रे सुवना, कइसे चीन्हो लछमन वीर,

गहना मां चिन्हों सिया जानकी रे सुवना,बाने मां लछमन वीर,

कउने खन्वाये राम सगुरिया रे सुवना,कउने बंधवाये रे पार,

रामे खन्वाये राम सगुरिया रे सुवना,लछिमन बंधवाये रे पार ।

नीलकंठ पक्षी कीटभक्षी होने के बाद भी लोकगीतकार की दृष्टि में इसलिए शुभ है क्योकि उसके मुख में राम नाम विराजमान है । यही कारण है की नीलकंठ का दर्शन शुभ माना जाता है –

नीलकंठ कीरा भखै मुखे बिराजे राम

करनी सो कैसे रहे ,दरसन सो हैं काम

इस राउत दोहे में राम द्वारा ताड़का को मारना तथा अहिल्या को शापमुक्त कर वन्य जीवन को सार्थक करने की प्रतीति है –

बन माँ जन्म सुफल करी जाए, मारे ताड़का ला जाए के

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

श्रीमती संगीता शर्मा (2026). ***छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की धार्मिक पृष्ठभूमि : राम के विशेष सन्दर्भ में.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 52-62.

गौतम रिसी के नारी अहिल्या, तारे चरन छुआए के

राउत नृत्य हेतु साज सज्जा करते समय रावत राम-रज लगाने का उल्लेख करता है –

कोनो लगावे चन्दन चोवा कौनो लगावे चीट

अहिरा लगावे रे राम रज दिखत हे पीवर देह

छत्तीसगढ़ में रसोई की पवित्रता हेतु राम के साथ जोड़कर विवाह गीत गाये जाते हैं –

कोन तोर करिही राम रसोइया कोन करिही जेवनार

साक सब्जियों के नाम को भी राम सीता से जोड़कर कहा जाता है । 'भिन्डी' को 'रामकेलिया' और वन सीताफल को रामफल तथा शरीफा को छिताफल से सम्बोधित किया जाता है । राम को सृष्टि का रचियता मानकर कहा जाता है – **राम के चिरैया राम के खेत, खा ले चिरिया भर भर पेट ।**

निष्कर्ष :

लोकगीत स्वभाविक हैं प्रकृति की गोद में इनका जन्म है इनमे किसी प्रकार की कृत्रिमता का स्थान नहीं है । छत्तीसगढ लोकगीतों की दृष्टि से अत्यंत सम्पन्न क्षेत्र है । यहाँ के लोकगीतों में धर्मी भावना का प्राधान्य है । यदि धर्म तिरोहित हो जायेगा तो लोकगीतों का अस्तित्व भी समाप्त हो जाएगा ।

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में जहाँ श्री राम का व्यक्तित्व पुराणसम्मत तथा वाल्मीकि और तुलसी से विशेष रूप से प्रभावित है वही जनमानस की कल्पनाशीलता ने उसे कौशल्या पुत्र भांचा राम के नवीन रूपों में प्रतिस्थापित किया है ।

AUTHOR(S) CONTRIBUTION

The writers affirm that they have no connections to, or engagement with, any group or body that provides financial or non-financial assistance for the topics or resources covered in this manuscript.

CONFLICTS OF INTEREST

The authors declared no potential conflicts of interest with respect to the research, authorship, and/or publication of this article.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

श्रीमती संगीता शर्मा (2026). ***छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की धार्मिक पृष्ठभूमि : राम के विशेष सन्दर्भ में.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 5(4). 52-62.

PLAGIARISM POLICY

All authors declare that any kind of violation of plagiarism, copyright and ethical matters will take care by all authors. Journal and editors are not liable for aforesaid matters.

SOURCES OF FUNDING

The authors received no financial aid to support for the research.

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र,डॉ.शांता ,दीक्षित ब्रदर्स ,छत्तीसगढ़ का विकास ,इतिहास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन.

2. डॉ. अशोक शुक्ल ,छत्तीसगढ़ का विकास ,इतिहास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन.

3. राम नरेश त्रिपाठी ,कविता कौमुदी - ग्राम गीत भाग तीन, बम्बई नवनीत प्रकाशन 1955 .

4. प्रेमचन्द अग्रवाल , छत्तीसगढ़ बेसिन ,1968.

5. डॉ. सुनंदा मरावी , छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की पृष्ठभूमि ,भावना प्रकाशन दिल्ली,2016 .

6. डॉ. हनुमंत नायडू , छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का लोकतात्विक तथा मनोवैज्ञानिक अनुशीलन, विश्व भारती प्रकाशन,1987 .

7. डॉ.कुंतल गोयल,काले कंठो के श्वेत गीत,पंकज बुक्स दिल्ली,प्रथम संस्करण 2012.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License